R. L. S. Y. COLLEGE, RANCHI

DEPARTMENT OF HINDI

COURSE OUTCOMES FOR M.A. HINDI

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम का परिणाम

स्नातकोत्तर के प्रत्येक सेमेस्टर में चार पत्र हैं.

प्रथम सेमेस्टर में प्रथम पत्र एफ. सी.एच.आई.एन 101 में पांच इकाईयां हैं. इकाई एक में हिन्दी भाषा की परिभाषा, स्वरूप, भाषोत्पत्ति का अध्ययन कराया जाता है. इकाई दो में भाषा का आकृति मूलक और पारिवारिक वर्गीकरण बताया जाता है. इकाई तीन में ध्वनि और अर्थ परिवर्तन के कारण और दिशाएँ तथा व्याकरणिक कोटियाँ पढ़ाई जाती हैं. इकाई चार हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास, भाषा के विभिन्न रुप और इकाई पांच में पारिभाषिक शब्दावली की समस्या और समाधान पढ़ाया जाता है. साथ ही साथ हिन्दी के सरलीकरण के लिए क्या किया जा सकता है.यह पत्र हिन्दी भाषा के सैद्धांतिक पक्ष को समझाता है.

कोर कोर्स सी. सी.102 को भी पांच इकाइयों में बांटा गया है. आदिकाल, भक्तिकाल, सगुण काव्य धारा और रीतिकाल.यह पत्र हिन्दी साहित्य के काव्यगत विकास को बतलाता है.

कोर कोर्स सी. सी.103 है. इसमें आधुनिक काल काव्यगत विकास -क्रम को दर्शाता है. भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद युग एवं विभिन्न गद्य विधाओं का उद्भव और विकास की जानकारी विद्यार्थियों को मिलती है. साथ ही गद्य विधाओं में नाटक, एकांकी, कहानी, उपन्यास, निबंध और आलोचना पढ़ाया जाता है.

कोर कोर्स 104 में विभिन्न कालों के कुछ महत्वपूर्ण रचनाओं का अध्ययन कराया जाता है, जैसे- पृथवीराज, विद्यापति, सूरदास, कबीर, जायसी और तुलसीदास.

इस प्रकार सेमेस्टर एक हिन्दी साहित्य को सामान्य रूप में समझाया जाता है.

सेमेस्टर दो में भी चार पत्र हैं.

201 में हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार की पढ़ाई कराई जाती है. इसके अंतर्गत हिन्दी पत्रकारिता की परिभाषा, क्षेत्र, उद्देश्य, उद्भव और विकास के विभिन्न चरणों की पढ़ाई होती है. साथ ही जनसंचार के सभी माध्यम, कम्प्यूटर, इंटरनेट की उपयोगिता तथा झारखंड की हिन्दी पत्रकारिता की पढ़ाई कराई जाती है.

कोर कोर्स दो रीति कालीन कवि केशवदास, बिहारीलाल, भूषण, मतिराम और घनानंद के काव्यगत परिचय से संबंधित है.

कोर कोर्स तीन में भारतीय एवं पाश्चात्य शास्त्र एवं हिन्दी आलोचना की पढ़ाई कराई जाती है.

कोर कोर्स चार भारतीय साहित्य एवं संस्कृत साहित्य से संबंधित है. इससे विद्यार्थियों को भारतीय साहित्य के साथ साथ उर्दू, संस्कृत साहित्य का उद्भव और विकास तथा कालजयी रचनाएँ, पूर्व मेघ तथा श्री मद्भभागवतगीता पढ़ाया जाता है.इस अध्ययन से विषय का विषयनिष्ठ एवं वर्णनात्मक ज्ञान प्राप्त होता है.

सेमेस्टर तीन में 301 में आधुनिक हिंदी प्रबंध- काव्य की पढ़ाई

कराई जाती है, जैसे- प्रियप्रवास, साकेत, उर्वशी, कामायनी और हल्दीघाटी. ये हिन्दी की कालजयी रचनाएँ हैं. इसलिए इनसे परिचित होना आवश्यक है.

302 हिन्दी कथा साहित्य के अध्ययन से संबंधित है. हिन्दी के कथाकार प्रेमचंद का कालजयी उपन्यास, गोदान, राधाकृष्ण का उपन्यास रुपान्तर, श्री लाल शुक्ल का उपन्यास रागदरबारी, भीष्म साहनी का उपन्यास तमस पढाया जाता है .. कहानियों में हिन्दी की महत्वपूर्ण कहानियों की पढ़ाई होती है.

303 में हिन्दी नाटक और एकांकी की पढ़ाई होती है. ये नाटक हिन्दी नाटक के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालते हैं. जैसे: अंधेरनगरी, चन्द्र गुप्त, आधे-अधूरे, अशोक. इसके अलावा महत्वपूर्ण एकांकियों की पढ़ाई होती है.

304 हिन्दी निबंध और रेखाचित्र की पढ़ाई से संबंधित है. निबंधों में हिन्दी निबंध की विकास यात्रा की पढ़ाई होती है साथ ही प्रमुख रेखाचित्र पथ के साथी और माटी की मूरत के कुछ महत्वपूर्ण संस्मरण हैं. साहित्य की विभिन्न विधाओं को बताया जाता है.

सेमेस्टर चार में 401 पत्र में छायावादी एवं छायावादोत्तर कवियों की महत्वपूर्ण रचनाओं की पढ़ाई होती है.

402 में प्रयोजनमूलक हिन्दी की पढ़ाई होती है.यह, राजभाषा के विकास से संबंधित अध्ययन है. इसमें हिन्दी की संवैधानिक स्थिति, पारिभाषिक शब्दावली की विभिन्न समस्याओं को बताया जाता है.यह हिन्दी भाषा केंद्रित सैद्धांतिक पत्र है.

403 पत्र में शोध-प्रविधि की पढ़ाई होती है. ताकि विद्यार्थी 404 के लघु शोध के सिद्धांतों को समझ सकें और शोध सिद्धांतों को समझते हुए शोध-प्रबंध लिख सकें.यह व्यावहारिक ज्ञान हासिल करने से संबंधित पढ़ाई का पत्र है.

इस प्रकार 404 पत्र में लघु शोध लिखना होता है. इसकी रूपरेखा तैयार कर, प्रासंगिक विषय चुनते हुए उसे निष्कर्ष तक पहुंचाना होता है, लेकिन इसके अतिरिक्त और भी विकल्प है, जैसे साहित्यिक निबंध लेखन और हिन्दी भाषा के विभिन्न पक्षों से संबंधित निबंध लेखन.

इस प्रकार स्नातकोत्तर हिन्दी के विभिन्न पत्रों के माध्यम से सृजनात्मक क्षमता का विकास होता है और रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं.

COURSE OUTCOMES FOR B.A. HINDI HONOURS

स्नातक पाठ्यक्रम का परिणाम

हिन्दी भाषा और साहित्य में स्नातक करते समय कोर एक के द्वारा हिन्दी साहित्य का इतिहास मालूम होता है जिससे हम हिन्दी साहित्य के अतीत, वर्तमान और भविष्य की परख कर सकते हैं.

कोर कोर्स दो के द्वारा हिन्दी साहित्य के आदिकालीन कवियों और भक्तिकालीन कवियों की भाषा और उनकी कविताओं से अवगत होते हैं.यह स्नातक प्रथम वर्ष प्रतिष्ठा की पढ़ाईका परिणाम प्राप्त होता है.

द्वितीय वर्ष के तृतीय सेमेस्टर में कोर तीन और कोर चारकी पढ़ाई होती है.

कोर तीन में रीतिकालीन कवियों के काव्य की भाषा और साहित्य की जानकारी मिलती है. कोर चार से आधुनिक हिंदी कविता की विशेषताओं और स्वातंत्र्योत्तर रचनाओं से परिचित होने का अवसर प्राप्त होता है.

सेमेस्टर पांच में कोर पांच,कोर छह, सात की पढ़ाई होती है.

कोर पांच हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल की रचनाओं के काव्य से परिचित कराता इसका परिणाम यह होता है कि विद्यार्थी कवियों की आधुनिक विचारधाराओं, संवेदनाओं से अवगत होते हैं.

कोर कोर्स छह के द्वारा हिन्दी उपन्यास की विकास- यात्रा से लेकर उपन्यासों की आधुनिक विचारधाराओं से अवगत कराया जाता है. इससे विद्यार्थी कथात्मक अनुभूति और कथा की विकास यात्रा मालूम होती है.

कोर कोर्स सात के हिन्दी- निबंध के विकास को जानते हैं. इससे विद्यार्थियों की गद्य - विधाओं पर अच्छी पकड़ कायम होती चली जाती है.

सेमेस्टर चार में भी कोर कोर्स के चार पत्र हैं.

कोर आठ में भाषा विज्ञान की पढ़ाई होती है. इसके द्वारा हिन्दी भाषा की बनावट, भाषा की विशेषताएं, भाषा के जन्म उसकी दिशाएं, देवनागरी लिपि के उद्भव और विकास की जानकारी होती है.

कोर नौ में राष्ट्र भाषा हिन्दी, हिन्दी की विभिन्न बोलियों, देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता समझाई जाती है.

कोर दस में प्रयोजनमूलक भाषा, उसकी विभिन्न दिशाओं, विभिन्न प्रकार की भाषा- प्रयुक्ति की पढ़ाई होती है जिससे प्रायोगिक हिन्दी की जानकारी भी मिलती है और रोजगार प्राप्त करने में सहायता भी मिलती है.

हिन्दी में कौशल विकास के लिए सेक्शन टू है जिसमें कार्यालयी हिन्दी की पढ़ाई होती है. जिसके द्वारा ज्ञापन, अनुस्मारक, अधिसूचना, विज्ञापन, निविदा, लिखना सिखाया जाता है. साथ ही विभिन्न प्र युक्तियों का अभ्यास, पत्राचार लिखना भी सीखते हैं.

सेमेस्टर पांच में दो कोर कोर्स की पढ़ाई होती है और दो अनुशासनिक विशिष्ट चयन के अन्तर्गत डी एस ई एक और दो की पढ़ाई होती है.

कोर ग्यारह में काव्य शास्त्र के सैद्धांतिक पक्ष और अलंकार की परिभाषा उसके भेद और परिभाषाएं बताई जाती है.

कोर बारह में पाश्चात्य काव्य शास्त्र के कवियों के सिद्धांत बतलाये जाते हैं.

डी एस. ई. एक में सूरदास और तुलसीदास के काव्य का विशिष्ट अध्ययन कराया जाता है.

डी एस. ई. दो में कबीर और निराला के काव्य का विशिष्ट अध्ययन कराया जाता है.

सेमेस्टर छह में भी चार पत्र हैं. कोर तेरह, चौदह, डी एस. ई. तीन और चार है.

कोर तेरह में हिन्दी समीक्षा के विभिन्न कालों, विभिन्न समीक्षकों के योगदान से परिचित कराया जाता है.

कोर चौदह में हिन्दी को विश्व भाषा बनाने के लिए किए गए प्रयत्न की दिशा में किए गये प्रयत्न की जानकारी दी जाती है ताकि हिन्दी को विश्व भाषा बनाया जा सके.अ

डी एस. ई. तीन के द्वारा लोक साहित्य की अवधारणा और प्रसिद्ध लोक कथाओं को बताया जाता है. इससे विद्यार्थी हिन्दी की लोक गाथा परंपरा से अवगत होते हैं.

डी एस. ई. चार में हिन्दी के नये विमर्श से अवगत कराया जाता है.

इस प्रकार स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा की पढ़ाई कर विद्यार्थी साहित्य के समस्त पक्षों से अवगत होते हैं.